



# एग्री आर्टिकल्स

(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)

वर्ष: 02, अंक: 05 (सितम्बर-अक्टूबर, 2022)

[www.agriarticles.com](http://www.agriarticles.com) पर ऑनलाइन उपलब्ध

© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एन.: 2582-9882

## चंदन वृक्ष के स्पाइक रोग का बढ़ता प्रकोप

(विकास कुमार)

कृषि महाविद्यालय, स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर

संवादी लेखक का ईमेल पता: [vikashsihag029@gmail.com](mailto:vikashsihag029@gmail.com)

चंदन (संथाल एल्बम), एक अत्यधिक मूल्यवान वृक्ष की प्रजाति है, जो सुगंधित लकड़ी, तेल, पारंपरिक कॉस्मेटिक और इत्र उद्योग के लिए अत्यधिक लोकप्रिय है। सैण्डल स्पाइक रोग, जो फायटोप्लाज्मा जनित है, के कारण बड़े पैमाने पर दक्षिण भारत के कर्नाटक, केरल एवं तमिलनाडू प्रदेशों में इसके प्राकृतिक स्रोत समाप्त होते जा रहे हैं। चंदन वृक्ष का स्पाइक रोग एक विनाशकारी रोग है, जो चंदन की लकड़ी की गुणवत्ता और सुगंधित तेल की गुणवत्ता को अत्यधिक प्रभावित करता है। यह रोग एक सदी से भी अधिक पुराना है। सर्वप्रथम इस रोग की पहचान कर्नाटक के कूर्ग जिले में वर्ष 1899 में की गई और इसके परिणामस्वरूप एक लाख से अधिक चंदन वृक्ष वर्ष 1903-1916 के दौरान मैसूर और कूर्ग में नष्ट कर दिये गए। अभी हाल ही में प्रकाशित न्यूज के अनुसार केरल में टॉप क्वालिटी चंदन के जंगल में इंफेक्शन के कारण काटे जाएंगे 2 हजार पेड़।

### लक्षण

स्पाइक रोग के प्रमुख लक्षण पत्ती के आकार में कमी, छोटे इंटरनोड्स और पत्तियों की टहनियों पर झाड़ीनुमा जैसी रचना बन जाती है। रोगी पौधे आमतौर पर 1 से 2 वर्ष के भीतर ही मर जाते हैं। स्पाइक रोग के कारण भारत में केरल और कर्नाटक राज्यों के जंगलों में चंदन वृक्षों की आबादी लगभग समाप्त हो गई है और चंदन का उत्पादन लगभग 20 प्रतिशत की वार्षिक दर से घट रहा है।

**दैनिक भास्कर** 🏠 होम 📺 वीडियो 🔍 सर्च

🔥 टॉप न्यूज़  
📍 राज्य-शहर  
📅 DB ओरिजिनल  
🏏 क्रिकेट  
🎬 बॉलीवुड  
🏠 देश  
🌍 विदेश  
🏆 स्पोर्ट्स  
💰 बिजनेस  
☀️ राशिफल

खतरे में है चंदन का जंगल: केरल में टॉप क्वालिटी चंदन के जंगल में हुआ इंफेक्शन, काटे जाएंगे 2 हजार पेड़

तिरुवनंतपुरम 15 दिन पहले

📱 📧 📷

**दैनिक भास्कर** | चंदन के पेड़ों को लगी बीमारी

[ps://www.bhaskar.com](https://www.bhaskar.com)

**प्रसार**

चंदन का स्पाइक रोग ग्राफिटिंग के माध्यम से प्रसारित होता है। पर्ण फुदका कीट की कुछ प्रजातियां इस रोग को ग्रसित पौधे से स्वस्थ पौधों में फैलाने में सक्षम पाई गई हैं, जिससे इस रोग को कीट संचरण द्वारा व्यापक रूप से फैलाने में मदद मिलती है। वास्तविक कीट वेक्टर एवं मेजबान खरपतवार की प्रजातियों की पहचान अभी पूर्ण रूप से संभव नहीं हो सकी है।

**रोकथाम**

चंदन स्पाइक रोग के लिए जिम्मेदार फायटोप्लाज्मा को नियंत्रित करने के लिए आर्सेनिक, बेलेट या टेट्रासाइक्लिन का उपयोग करके या गर्म पानी से उपचारित करना प्रभावी है। हालांकि एक बड़े वन क्षेत्र में टेट्रासाइक्लिन या गर्म जल उपचार का उपयोग अव्यवहारिक है। चंदन के ऊतकों से स्पाइक रोग को खत्म करने के लिए सबसे प्रभावी तरीका रोग मुक्त श्रेष्ठ जीनोटाइप का विकास करना होगा। इसके लिए भविष्य में आनुवंशिक परिवर्तन को नियोजित करने के लिए नवीन शोध आवश्यक है। फायटोप्लाज्मा जनित रोग को कीट वेक्टर के उचित प्रबंधन द्वारा भी नियंत्रित किया जाना संभव है। इसके साथ ही साथ वनों व खेतों से संक्रमित चंदन वृक्षों को नष्ट करना एवं खरपतवार के स्पाइक रोग फायटोप्लाज्मा के प्राकृतिक स्रोत हो सकते हैं, उन्हें समय से पहचान कर नष्ट करना भी आवश्यक है।